1 जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर (1526 ई. – 1530 ई.)

- **जन्म** – 14 फरवरी, 1483 ई. को फरगना में
- **मृत्यु** – 26 दिसम्बर, 1530 ई. को आगरा में
- **माता** – कुतुलुग निगार खाँ (ये मंगोल वंशज थी)
- **पिता** – उमरशेख मिर्जा (ये तैमूर वंशज थे)
- **पत्नी** – माहम बेगम, दिलदार बेगम, गुलरूख बेगम, मौसमा सुल्तान बेगम, जैनाब सुल्तान बेगम, आयेशा सुल्तान बेगम
- **पुत्र** – हुमायूँ, कामरान, अस्करी और हिंदाल
- **पुत्री** – गुलबदन बेगम, गुलरंग बेगम, गुलचेहरा बेगम, फक्र–उन–निस्सा
- **दादी** – उसनदौला बेगम (दौलत बेगम)
- **दादा** – मीरान शाह
- **उत्तराधिकारी** – हुमायूँ
- **आध्यात्मिक गुरू** – उबैदुल्लाह अहरार
- **सेनापति** – मीरबकी, मेहंदी हसन
- **बजीर** – मेहंदी ख्वाजा
- **मकबरा** – काबुल

- बाबर मुगल वंश का संस्थापक था। मुगल का अर्थ बहादुर होता है। तुर्की भाषा में बाबर का अर्थ 'बाघ' होता है। बाबर तुर्क और मंगोल दोनों के रक्त का मिश्रण था। बाबर का पैतृक राज्य फरगना था। बाबर ने जिस नवीन वंश की नीव डाली, वह तुर्की नस्ल का 'चगताई' वंश था। जिसका नाम चंगेज खाँ के द्वितीय पुत्र के नाम पर पड़ा, लेकिन आमतौर पर उसे 'मुगल वंश' कहा गया है।

- बाबर पिता की मृत्यु के बाद 11 वर्ष की आयु में 1494 ई. में फरगना की गद्दी पर बैठा। बाबर ने 1501 ई. में समरकंद पर अधिकार कर लिया। 1504 ई. में काबुल पर अधिकार कर लिया। लेकिन ये विजय कुछ समय के लिए ही थी।

- बाबर ने 1507 ई. में 'पादशाह' (बादशाह) की उपाधि धारण की। पादशाह की उपाधि धारण करने से पहले बाबर 'मिर्जा' की पैतृक उपाधि धारण करता था।

- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'तुजुक–ए–बाबरी' (बाबरनामा) तुर्की भाषा में लिखी। बाबरनामा का फारसी मे अनुवाद **अब्दुल रहीम खानखाना** ने किया। बाबरनामा का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद **श्रीमती बेबरिज** ने किया।

- बाबरनामा में बाबर ने **राणा सांगा** तथा **कृष्ण देव राय** की चर्चा की है।

- बाबरनामा में 5 मुस्लिम राज्यों की चर्चा है– **बंगाल, दिल्ली, मालवा, गुजरात, बहमनी**।

- बाबरनामा में 2 हिन्दु राज्यों की चर्चा है– **विजयनगर और मेवाड़**

- बाबर ने लिखा है कि ***"भारतीय मरना जानते हैं, लड़ना नहीं।"***

- सड़क मापने के लिए बाबर ने **'गज–ए–बाबरी'** पैमाना चलाया।

- बाबर ने **दीवान** नाम से **तुर्की** भाषा में कविताओं का संग्रह करवाया।

- बाबर में **गुलाब की खेती** बाबर लाया।

Ranjeet Yadav Sir

- बाबरनामा में भारत को धनी राष्ट्र, गंगा नदी, फलों का राजा आम, मैदान शब्द, कारीगरों को राष्ट्र तथा फारस की चित्रकार बिहजाद का नाम मिलता है।

- बाबर अपने साथ दो महत्वपूर्ण खेल भारत लाया। पहला, **गंजीफा** ये ताश के पत्तों का खेल होता था। दूसरा, **इश्कबाजी** ये कबूतरों का खेल था। बाबर का प्रिय खेल इश्कबाजी था।

- बाबर ने एक नए तरह के छन्द **मुबइयान** का सृजन किया।

- बाबर ने अलंकार शास्त्र पर **'रिसाल–ए–उसज'** नामक पुस्तक लिखी और **'खत–ए–बाबरी'** नाम से एक नई शैली प्रारंभ की।

- बाबर ने पहली बार युद्ध में **तोपखानों** को प्रयोग किया।

- बाबर को दो बार दफनाया गया। पहले **आगरा** में, फिर **काबुल** में। बाबर का प्रिय शहर काबुल था। उसकी इच्छा थी कि उसे काबुल में दफनाया जाए।

- बाबर को बाग बगीचों का शौक था। बाबर ने कश्मीर में **निशात बाग,** लाहौर में **शालीमार बाग** और आगरा में ज्यामितीय विधि से **नूर–ए–अफगान (नूरे–अफगान)** बाग बनावाया। जिसे आरामबाग भी कहा जाता है।

- उदारता के कारण बाबर को **कलन्दर** कहा गया।

- खानवा के युद्ध को जीतने के बाद उसने **गाजी (काफिरों को मारने वाला)** की उपाधि धारण की।

- बाबर ने काबुल में **शाहरूख** नामक **चांदी** का सिक्का चलाया। बाबर ने कंधार में **बाबरी** नामक **चांदी** का सिक्का चलाया। बाबर के चांदी के सिक्कों पर एक तरफ **कलमा** और चारों **खलीफाओं** का नाम तथा दूसरी ओर बाबर का नाम और उपाधि अंकित होती थी।

- चारों खलीफाओं के नाम– **अबुबक्र, उमर, उस्मान, अली।**

- बाबर ने पानीपत में काबुली बाग में मस्दिज बनवाई। बाबर ने संभल में जामा मस्जिद बनवाई। बाबर ने आगरा में लोदी किले के अंदर आगरा मस्जिद बनवाई।

- बाबर के सेनापति **मीरबकी** ने अयोध्या में **बाबरी मस्जिद** बनवाई।

- बाबर युद्ध में **तुगलमा युद्ध पद्धति** का प्रयोग करता था। यह पद्धति उसने उज्बेकों से सीखी।

- बाबर तोपों को सजाने के लिए **उस्मानी विधि (रूमी विधि)** का प्रयोग करता था।

- बाबर के तोपचियों का नाम– **उस्ताद अली, मुस्तफा खाँ।**

- बाबर के आक्रमण के समय भारत का शासक इब्राहिम लोदी था।

बाबर के भारत पर आक्रमण

- बाबर ने भारत पर प्रथम आक्रमण **यूसूफजाई** जाति के विरूद्ध किया (1519)। इस अभियान में बाबर ने **बाजौर** और **भेरा** के किले को अपने अधिकार में ले लिया। 1520 ई. में बाबर ने **बाजौर** और **भेरा** को पुनः जीता तथा **स्यालकोट** एवं **सैय्यदपुर** को भी अपने अधिकार में कर लिया।

- 1524 ई. में बाबर के पेशावर अभियान के समय **दौलत खाँ लोदी** ने अपने पुत्र दिलावर खाँ लोदी द्वारा भारत पर

Ranjeet Yadav Sir

आक्रमण करने के लिए बाबर को निमंत्रण भेजा। दौलत खाँ लोदी उस समय पंजाब का गर्वनर था। यह इब्राहिम लोदी का चाचा था। कुछ इतिहासकार यह कहते हैं, **राणा सांगा** ने भी बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए निमंत्रण भेजा था।

पानीपत का प्रथम युद्ध (1526 ई.)

- यह युद्ध दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी और बाबर के मध्य लड़ा गया। इस युद्ध में इब्राहिम लोदी मारा गया। इब्राहिम लोदी मध्यकालीन भारत का एकमात्र सुल्तान था। जो युद्ध भूमि में ही मारा गया। इसके मरने के साथ ही दिल्ली सल्तनत का अंत हो गया और मुगल काल की शुरूआत हुई।

- पानीपत के युद्ध को जीतने का श्रेय बाबर ने अपने धनुधारियों को दिया है। इस युद्ध को जीतने के बाद बाबर ने प्रत्येक काबुल निवासी को एक–एक चांदी का सिक्का उपहार स्वरूप दिया। बहुत सारी सम्पत्ति अपने सैनिकों के बीच में बाँट दी। उसकी इसी उदारता के कारण बाबर को कलंदर की उपाधि दी गई।

- इस युद्ध में बाबर ने पहली बार **'तुलगमा युद्ध पद्धति'** का प्रयोग किया। इस युद्ध में बाबर ने तोपों को सजाने में **'उस्मानी पद्धति'** का प्रयोग किया। इस पद्धति में दो गाड़ियों के बीच में पर्याप्त जगह छोड़कर तोप को रखकर चलाया जाता है।

- इस युद्ध के बाद बाबर ने दिल्ली और आगरा पर कब्जा कर लिया।

खानवा का युद्ध (1527 ई.)

- यह युद्ध चित्तौड़ के राजा राजपूत राणा सांगा और बाबर के बीच हुआ। इस युद्ध में राणा सांगा की हार हुई। इस युद्ध को जीतने के बाद बाबर ने **गाजी** की उपाधि धारण की। इस युद्ध में बाबर ने 'जिहाद' (धर्मयुद्ध) का नारा दिया। इस युद्ध में बाबर ने शराब के प्रयोग पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया।

- इस युद्ध में अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिए बाबर ने मुसलमानों से वसूल किए जाने वाले **तमगा कर** को समाप्त कर दिया। तमगाकर एक व्यापारिक कर था।

- इस युद्ध का मुख्य कारण बाबर को भारत में ही रहने का निश्चय था। क्योंकि राणा सांगा यह सोचता था कि बाबर भी अन्य विदेशी आक्रमणकारियों की भांति देश को लूटकर वापस चला जाएगा। यही कारण है, कि इब्राहिम लोदी के विरूद्ध बाबर को सहायता देने का वचन राणा सांगा ने किया था।

चंदेरी का युद्ध (1528 ई.)

- यह युद्ध बाबर और चंदेरी के शासक मेदिनी राय के बीच हुआ। इस युद्ध में मेदिनी राय की हार हुई। इस युद्ध के बाद बाबर ने मालवा का क्षेत्र लिया। इस युद्ध में हजारों की संख्या में राजपूतों का कत्ल किया गया महिलाओं ने जौहर को अपनाया।

घाघरा या घग्गर का युद्ध (1529 ई.)

- यह युद्ध बाबर तथा महमूद लोदी के बीच हुआ। महमूद लोदी बिहार तथा बंगाल की संयुक्त अफगान सेना का नेतृत्व कर रहा था। इस युद्ध में महमूद लोदी की हार हुई और बाबर ने भारत पर स्थायी रूप से अधिकार कर लिया।

26 दिसम्बर (1530 ई.) बाबर की मृत्यु हो गयी। उसके शव को आगरा के आरामबाग में रखा गया। आगे चलकर बाबर की इच्छा के अनुरोध उसको काबुल में दफनाया गया।

नोट : 16 फरवरी 1527 को बयाना (भरतपुर) का युद्ध हुआ। बाबर के सेनापति मेंहदी हसन ने बयाना पर अधिकार कर लिया • लेकिन राणा सागा ने मेहंदी हसन को मार दिया।

- बाबर ने तोपखाने का प्रयोग ईरानियों से सीखा। बाबर ने तुलगमा युद्ध पद्धति मंगोलों से सीखी।

Ranjeet Yadav Sir

• बाबर की मातृभाषा चगताई भाषा थी।
• उज्बेगिस्तान में बाबर को बहुत सम्मान दिया जाता है। उसे वहाँ राष्ट्रीय नायक की उपाधि प्राप्त है। ,
• सन् 2005 में पाकिस्तान में बाबर मिसाइन का परीक्षण किया।
• बाबर ने हैरात शहर को बुद्धिजीवियों से भरा शहर कहा था।
• राणा सांगा तीन शासकों सिकंदर लोदी, इब्राहिम लोदी तथा बाबर के समकालीन था।
• प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने राणा सांगा को सैनिकों का भग्नावशेष कहा।
• उस्ताद अली और मुस्तफा बाबर के निशानेबाज थे।

बाबरनामा में 5 मुस्लिम राज्यों की चर्चा की गई है, जिनके शासक निम्न हैं–

- **मालवा** – महमूद खिलजी द्वितीय
- **गुजरात** – मुजफ्फर शाह द्वितीय
- **दिल्ली** – इब्राहिम लोदी
- **बंगाल** – नूसरत शाह
- **बहमनी** – काजी मुल्लाशाह

नोट : 1502 में सर – ए – पुल के युद्ध में सहबानी खान ने बाबर को हरा दिया और समरकंद पर कब्जा कर लिया।
• बाबर को जीवनी लेखकों का राजकुमार कहा जाता है।
• बाबर अपने पिता की तरफ से तैमूर का पांचवा वंशज था जबकि माता की तरफ से चंगेज खां का चौदहवां वंशज था।
• बाबर एक कुशल तीरंदाज था।

Ranjeet Yadav Sir

2 नासिरुद्दीन हुमायूँ (1530–40, 1555–56 ई.)

- **जन्म** – 06 मार्च, 1508 ई. को काबुल में
- **मृत्यु** – 01 जनवरी, 1556 ई. को दिल्ली में
- **माता** – माहम बेगम
- **पिता** – बाबर
- **पत्नी** – हमीदा बानो बेगम
- **बहन** – गुलबदन बेगम
- **पुत्र** – अकबर
- **भाई** – कामरान, अस्करी, हिन्दाल
- **दादी** – कुतुलुग निगार खाँ
- **उत्तराधिकारी** – अकबर
- **सेनापति** – बैरम खाँ
- **बजीर** – निजामुद्दीन अहमद, हिन्दुबेग
- **मकबरा** – दिल्ली में

- बाबर ने अपनी मृत्यु से पूर्व अपने चारों पुत्रों में से हुमायूँ को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था, हुमायूँ 12 वर्ष की अवस्था में बदख्शाँ का सूबेदार बना था। 22 वर्ष की अवस्था में 1530 ई. को आगरा में हुमायूँ का राज्यभिषेक हुआ।

- हुमायूँ के बारे में जानकारी **हुमायूँनामा** पुस्तक से मिलती है। यह पुस्तक इसकी बहन गुलबदन बेगम ने फारसी भाषा में लिखी थी।

- लैनपूल ने हुमायूँ के बारे में लिखा है– कि *''हुमायूँ जीवनभर लड़खड़ाता रहा और लड़खड़ाते हुए ही मर गया।''* हुमायूँ की मृत्यु **शेरमण्डल** नामक पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरकर हुई थी।

- हुमायूँ ने दिल्ली में **दीनपनाह** नामक भवन बनवाया। हुमायूँ ने हिसार में फतेहाबाद की मस्दित बनवाई। हुमायूँ का मकबरा उसकी पत्नी हाजी बेगम ने बनवाया। इस मकबरे का वास्तुकार मिर्जा ग्यास बेग था। दौहरी गुम्बदवाला यह भारत का पहला मकबरा था यह संगमरमर से बना था। इस मकबरे में चार बाग पद्धति का पहली बार प्रयोग किया गया था। हुमायूँ के मकबरे को 'ताजमहल का पूर्वगामी' कहा जाता है।

- हुमायूँ के मकबरे में मुगल वंश के सर्वाधिक व्यक्ति दफनाये गए हैं, जिनमें हुमायूँ के अलावा हाजी बेगम, हमीदा बानो बेगम, हुमायूँ की छोटी बेगम, दारा शिकोह, जहाँदारशाह, फर्रूखशियर, रफीउद्दजात, रफीउद्दौला और आलमगीर द्वितीय हैं।

- मुगलों का अन्तिम बादशाह बहादुर शाहँ जफर और उसके तीनों पुत्रों को अंग्रेज अधिकारी लेफ्टीनेंट हड़सन ने हुमायूँ के मकबरे से ही गिरफ्तार किया था।

- हुमायूँ ज्योतिष में अत्यधिक विश्वास रखता था। वह सप्ताह के सातों दिन सात रंग के कपड़े पहनता था। वह अफीम का शौकीन था।

हुमायूँ के युद्ध

कालिंजर का युद्ध (1531)

- यह युद्ध हुमायूँ और कालिंजर के शासक प्रताप रूद्र देव के साथ हुआ। इस युद्ध में प्रताप रूद्र देव की हार हुई। इसी युद्ध के समय हुमायूँ को यह सूचना मिली, कि अफगान सरदार महमूद लोदी बिहार से जौनपुर की ओर आ रहा है अतः हुमायूँ ने कालिंजर के शासक रूद्र देव से धन और सैनिक क्षतिपूर्ति लेकर वापस आगरा आ गया।

दोहरिया का युद्ध और चुनार का प्रथम घेरा (1532 ई.)

Ranjeet Yadav Sir

- यह युद्ध हुमायूँ और अफगान शासक महमूद लोदी के बीच हुआ। महमूद लोदी की तरफ से शेर खाँ ने उसका साथ छोड़ दिया। अतः महमूद लोदी भाग गया। हुमायूँ ने चुनार गढ़ पर घेरा डाला। हुमायूँ और शेर खाँ के बीच एक समझौता हुआ इस समझौते के तहत शेर खाँ ने मुगल आदिपत्य को स्वीकार कर लिया और अपने लड़के कुतुब खाँ के नेतृत्व में एक सेना हुमायूँ की सेवा में छोड़ दी। हुमायूँ आगरा वापस आ गया और दिल्ली में दीनपनाह नामक नगर बसाया। 1534 में बिहार में मुहम्मद जमान मिर्जा और मुहम्मद सुल्तान मिर्जा ने विद्रोह कर दिया अतः इन दोनों को गिरफ्तार कर ले गए।

चुनार का दूसरा घेरा (1538 ई.)

- इस घेरे के दौरान शेर खाँ का पुत्र कुतुब खाँ ने हुमायूँ को लम्बे समय तक रोक कर रखा। हुमायूँ चुनार के किले को जीतकर बंगाल की ओर बढ़ा। हुमायूँ जब बंगाल पहुँचा, तो शेरखाँ वहाँ से भागकर बिहार चला गया। हुमायूँ ने बंगाल की राजधानी गौंड का नाम बदलकर जन्नतावाद रख दिया।

चौंसा का युद्ध (1539 ई.)

- यह युद्ध कर्मनाशा नदी के तट पर लड़ा गया। बंगाल से लौटते वक्त हुमायूँ एवं शेर खाँ के बीच यह युद्ध हुआ। इस युद्ध में हुमायूँ की हार हुई। हुमायूँ भागते भागते नदी में कूद गया। हुमायूँ की जान निजाम साका नामक भिश्ती ने बचाई। हुमायूँनामा में लिखा है, कि इस भिश्ती को हुमायूँ ने एक दिन के लिए बादशाह बनाया और चमड़े के सिक्के जारी किए।

कन्नौज या बिलग्राम का युद्ध (1540 ई.)

- इस युद्ध में शेरशाह ने हुमायूँ को हरा दिया। शेरशाह ने दिल्ली पर नियंत्रण स्थापित कर लिया और दिल्ली में द्वितीय अफगान वंश की नीव डाली।
- 1540–1544 तक हुमायूँ भटकता रहा। शुरूआत में उसने अमरकोट के राजा वीरशाल के यहाँ शरण ली। अपने निर्वासित जीवन के दौरान ही हुमायूँ ने मीर अली अकबर की पुत्री हमीदा बानो बेगम से 1541 ई. में निकाह किया। बाद में हुमायूँ ईरान के शासक शाह के यहाँ शरणार्थी बनकर रहा।
- 1545 ई. में ईरान के शासक शाहँ की मदद से हुमायूँ ने काबुल और कंधार को जीत लिया। जहाँ पर कामरान का शासन था। 1555 में हुमायूँ ने लाहौर को जीत लिया।

मच्छीवाड़ा का युद्ध (1555 ई.)

- यह युद्ध हुमायूँ और अफगान सरदार हैबत खाँ और तातार खाँ के बीच हुआ। हुमायूँ ने अफगानों को हरा दिया इस युद्ध के माध्यम से हुमायूँ ने पंजाब को जीत लिया।

सरहिन्द का युद्ध (1555 ई.)

- यह युद्ध अफगान सेना और मुगल सेना के बीच हुआ। इस युद्ध में अफगानों की तरफ से सुल्तान सिकंदर शाह सूर लड़ा और मुगलों की तरफ से बैरम खाँ लड़ा। इस युद्ध में अफगानों की पराजय हुई। इस युद्ध के बाद दिल्ली पर पुनः मुगल वंश की स्थापना हुई। और हुमायूँ गद्दी पर बैठा।

Ranjeet Yadav Sir

3 जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर
(1556-1605 ई.)

- **जन्म** & 15 अक्टूबर, 1542 को अमरकोट के राजा वीरशाल के यहाँ
- **मृत्यु** – 27 अक्टूबर, 1605 फतेहपुर सीकरी में
- **माता** – हमीदा बानो बेगम
- **पिता** – हुमायूँ
- **पत्नी** – हरखाबाई
- **पुत्र** – जहाँगीर
- **दादा** – बाबर
- **उत्तराधिकारी** – जहाँगीर
- **सरंक्षक** – बैरम खाँ
- **आध्यात्मिक गुरू** – अब्दुल लतीफ
- **मकबरा** – सिकन्दरा, (आगरा)

- अकबर को मुगल साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक कहाँ जाता है। अकबर को सर्वप्रथम गजनी का सूबेदार नियुक्त किया गया था। दिल्ली पर कब्जा करने के बाद हुमायूँ ने उसे पंजाब का सूबेदार नियुक्त किया और उसका संरक्षक बैरम खाँ को बनाया।

- 1556 ई. में जब अकबर पंजाब में सिकन्दर सूर के खिलाफ सैनिक कार्रवाई कर रहा था, उसी समय उसके पिता की मृत्यु का समाचार प्राप्त होता है। अतः पंजाब के गुरूदासपुर जिले के कलानौर में 13 वर्ष की आयु में ईटों के सिंहासन पर बैरम खाँ ने अकबर का राज्यभिषेक कराया। हुमायूँ की मृत्यु के बाद दिल्ली और आगरा में पुनः सूरवंशी शासक आदिलशाह के प्रधानमंत्री हैमू ने अधिकार कर लिया था।

पानीपत का द्वितीय युद्ध (1556)

- 5 नवम्बर 1556 ई. को पानीपत का द्वितीय युद्ध हुआ था। यह युद्ध हैमू और बैरम खाँ के बीच हुआ। हैमू को विक्रमादित्य की उपाधि आदिलशाह ने दी थी, क्योंकि हैमू 22 युद्ध जीत चुका था। हैमू की आँख में तीर लगने के कारण वह मूर्छित होकर हाथी से गिर गया और युद्ध में हार गया। अतः अकबर दिल्ली और आगरा की गद्दी पर बैठा।

बैरम खाँ के संरक्षण का काल (1556–1560 ई.)

- बैरम खाँ फारस के शिया सम्प्रदाय से संबंधित था। अकबर की उम्र कम थी। इसलिए हुमायूँ ने वीर बैरम खाँ को अकबर का सरंक्षक नियुक्त किया। बैरम खाँ की ईमानदारी के कारण **खान–ए–खाना** की उपाधि दी गई। इस उपाधि का अर्थ होता है, **''यार वफादार।''**

- 1556 से 1560 ई. तक बैरम खाँ का प्रभुत्व रहा। बैरम खाँ ने ग्वालियर जौनपुर तथा चुनार के क्षेत्र को जीता। बैरम खाँ के बढ़ते प्रभाव को देखकर राजदरबार के भीतर से उसका विरोध होना शुरू हो गया। अकबर भी स्वयं प्रत्यक्ष शासन करना चाहता था। अतः अकबर ने बैरम खाँ से मक्का जाने को कहा।

- बैरम खाँ मक्का की यात्रा पर जा रहा था, इसी यात्रा के दौरान गुजरात के पाटन नामक स्थान पर मुबारक खाँ नामक व्यक्ति ने बैरम खाँ की हत्या कर दी। बैरम खाँ की हत्या के बाद उसकी विधवा सलीमा बेगम से अकबर ने निकाह कर लिया। और उसके पुत्र अब्दुल रहीम को गोद ले लिया। आगे चलकर अब्दुल रहीम को खान–ए–खाना की उपाधि दी गई।

पेटीकोट शासन या पर्दा शासन (1560–1562)

- इस समय को पेटीकोट शासन इसीलिए कहा गया, क्योंकि इस दौरान शासन में माहम अनगा, जिजी अनगा इत्यादि महिलाओं का प्रभुत्व ज्यादा रहा। पेटीकोट शासन के दौरान मुगल साम्राज्य में मालवा और गोंडवाना का क्षेत्र जीत लिया गया।

Ranjeet Yadav Sir

अकबर द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्य

धार्मिक कार्य

- अकबर परम तत्व की एकताओं में विश्वास रखता था। उसने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई। अकबर की धार्मिक नीति **सुलह–ए–कुल** की नीति पर आधारित थी। जो सबका साथ सबके विकास की बात करती थी। यह नीति अकबर ने अपने गुरू अब्दुल लतीफ से सीखी। अकबर ने धर्म में अमानवीय पक्षों को स्वीकार नहीं किया। अकबर ने धर्म आधारित भेद भाव को स्वीकार करने के लिए अनेक कदम उठाये। जैसे–
  - 1562 में युद्ध बंदियों को दास बनाए जाने पर रोक लगाई।
  - 1563 में तीर्थ यात्रा कर की समाप्ति।
  - 1564 में जजिया कर पर रोक लगाई।
  - 1575 में इबादत खाने की स्थापना की।

- फतेहपुर सीकरी में अकबर ने इबावत खाने का निर्माण किया। और प्रत्येक बृहस्पतिवार को धार्मिक चर्चा का आयोजन कराता था। इस इबादत खाने में अकबर ने प्रारंभ में केवल सुन्नी मुसलमान विद्वानों को बुलाया, किन्तु उनकी चर्चा सुनकर अकबर नाखुश हुआ। इस चर्चा का प्रमुख व्यक्ति शेख अब्दुल नबी था। अब्दुल नबी को अकबर शुरूआत में बहुत मानता था। आगे चलकर अब्दुल नबी को हटा दिया गया।

- अकबर यह समझ गया था कि सत्य सभी धर्मों में है। अतः इसके सार को समझने के लिए हमें सभी धर्म के पक्ष को जानना होगा। अतः अकबर ने विभिन्न धर्मों के गुरूओं को चर्चा में आमंत्रित किया। जैसे–
  - हिन्दु धर्म से देवी तथा पुरूषोत्तम को बुलाया।
  - पारसी धर्म से मेहरजी राणा, दस्तूरी राणा को बुलाया। दस्तूरी राणा से अकबर ने सूर्य नमस्कार सीखा।
  - ईसाई धर्म से अकाबीबा और मॉन्सरेट को बुलाया।
  - जैन धर्म से हरिविजय सूरी, जिन चंद्र सूरी, शांति चंद्र, विजय सैन सूरी को बुलाया। अकबर ने हरि विजय सूरी जगत गुरू की उपाधि दी। अकबर ने जिन चंद्र सूरी को युग प्रधान की उपाधि दी, तथा दो सौ बीगा भूमि अनुदान दी।

  अतः इबादत खाना ऐसा स्थल था, जहाँ विभिन्न धर्म के विद्वान आपस में वाद–विवाद करते थे।

महजरनामा की घोषणा (1579 ई.)

- अकबर ने महजर की घोषणा द्वारा यह अधिकार प्राप्त कर लिया, यदि किसी धार्मिक विषय पर विभिन्न धर्म गुरूओं के बीच मतभेद की स्थिति बनती है, तो उसकी अन्तिम व्याख्या का अधिकार अकबर के पास रहेगा। और अकबर जो कहेगा वही अन्तिम सत्य मान लिया जाएगा।
  - अकबर को ***"इंसान–ए–कामिल"*** कहा गया। जो हर समय लोगों की भलाई के लिए सोचता था।
  - अकबर ने अपने आप को ***अमीर–उल–मोमिनीन*** कहा।
  - उलेमाओं ने अकबर को ***"इमाम–ए–आदिल"*** घोषित किया।
  - महजर की रूपरेखा शेख मुबारक ने तैयार की थी। शेख मुबारक के पुत्र फैजी, अबुल फजल थे।

दीन–ए–इलाही/तौहीद–ए–इलाही (1582)

- दीन–ए–इलाही को कुछ लोगों ने अकबर का नया धर्म बताया है। जिसमें सभी धार्मों की अच्छी बातों का समावेश था। सामान्यतः इसका अर्थ एकेश्वरवाद से लिया जाता है। दीन–ए–इलाही एक आचार संहिता थी, जिसमें सामाजिक, धार्मिक समन्वय स्थापित किया गया था।

- दीन–ए–इलाही सभी धर्मों के लिए खुला था। इसकी कोई विशिष्ट कर्मकाण्डीय पद्धति नहीं थी, न ही कोई ग्रंथ था और न ही कोई पुरोहित वर्ग था। अतः इसे नया धर्म मानना उचित प्रतीत नहीं होता।

- स्मिथ नामक इतिहासकार ने दीन–ए–इलाही को अकबर की मूर्खता का स्मारक कहा।

- अबुल फजल इस व्यवस्था का प्रधान पुरोहित था, जो इसे अपनाने वाले व्यक्ति को बादशाह के पास ले जाते थे। बादशाह

Ranjeet Yadav Sir

उस व्यक्ति को पगड़ी पहनाकर एक प्रतीक चिन्ह देता था, जिस पर **अल्लाह–हू–अकबर** लिखा होता था। इसकी दीक्षा केवल रविवार के दिन ही दी जाती थी।

- इसे अपनाने वाला एकमात्र हिन्दू बीरवल था।

- 1583 ई. में अकबर ने **हिजरी संवत्** की जगह एक नए संवत् के रूप में **इलाही** संवत् को अपनाया।
- अकबर हिन्दुओं के त्यौहारों में भाग लेता था, तिलक लगाता था, और झरोखा दर्शन में भाग लेता था।
- जौनपुर के काजी मुल्ला अहमद याजदी ने अकबर के विरूद्ध फतवा जारी किया था।
- अब्दुल कादिर बदायूँनी ने अकबर को काफिर कहा। बदायूँनी ने **मुन्तखव–उत–तवारीख** पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में बदायूँनी ने अकबर की आलोचना की है। बदायूँनी ने रामायण और महाभारत का फारसी में अनुवाद किया।
- वयाजित अंसारी नामक व्यक्ति ने अकबर के शासनकाल में खुद को पैगम्बर घोषित कर दिया।
- अकबर ने सिक्खों के तीसरे गुरू **अमरदास** की पुत्री के नाम पर कही गाँव प्रदान किए।
- अकबर ने चिश्ती संप्रदाय को आश्रय दिया। वह सेख सलीम चिश्ती का परम भक्त था, इन्ही के नाम पर अकबर ने अपने बेटे का नाम सलीम रखा था। जो बाद में जहाँगीर कहलाया।
- अकबर ने **सुल्तान–ए–आदिल** या **इमाम–ए–आदिल** (न्यायप्रिय शासक) की उपाधि धारण की।
- अकबर ने प्रयागराज का नाम इलाहाबाद रखा।
- अकबर ने सती प्रथा को रोकने का प्रयास किया, विधवा विवाह को कानूनी मान्यता प्रदान की, तथा लड़के के विवाह की उम्र 16 और लड़की के विवाह की उम्र 14 निर्धारित की।
- अकबर का सम्पूर्ण साम्राज्य 12 भागों में विभाजित था। दक्षिण विजय के बाद यह संख्या 15 हो गई।

स्थापत्य

- अकबर ने आगरा में आगरा का लाल किला बनवाया। अकबर ने फतेहपुर सीकरी को अपनी राजधानी बनाया। अकबर ने फतेहपुर सीकरी में जहाँगीर महल, पंच महल, जामा–मस्जिद, बुलंद दरवाजा, शेख सलीम चिश्ती का मकबरा, इस्लामशाह का मकबरा, दीवाने आम, दीवाने खास तथा इलाहाबाद में इलाहाबाद का किला बनवाया। इलाहाबाद का किला अकबर के काल की अंतिम इमारत थी।
- गुजरात विजय के बाद अकबर ने फतेहपुर सीकरी में बुलंद दरवाजा बनवाया।
- अकबर ने गुजरात विद्रोह दबाने के कारण अब्दुर्रहीम को **खानखाना** की उपाधि दी।
- अकबर ने सबसे ज्यादा अपनी इमारतों में लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग किया।
- फतेहपुर सीकरी की डिजाइल बहाउद्दीन ने तैयार की थी।
- आगरा के किले में दो दरवाजें हैं, दिल्ली गेट और अमरसिंह गेट। इन गेटों पर अकबर ने मेवाड़ की रक्षा में अपने प्राणों की आहूति देने वाले दो वीर राजपूत नायकों– जयमल और फत्ता की मूर्तिया लगवाईं।
- अकबर ने अपनी इमारतों में हिन्दू–मुस्लिम शैलियों का समावेश किया।

साहित्य

- अकबर के काल की जानकारी अकबरनामा पुस्तक से मिलती है। यह पुस्तक अबुल फजल ने लिखी। अकबरनामा पुस्तक के तीन भाग हैं। तीसरे भाग को **आइन–ए–अकबरी** कहा जाता है।
- अबुल फजल ने पंचतंत्र का फारसी भाषा में अनुवार किया।
- निजामुद्दीन अहमद ने **तबकात–ए–अकबरी** पुस्तक लिखी।
- अबुल फजल का भाई फैजी ने **लीलावती** पुस्तक का फारसी में अनुवाद किया है।
- फैजी ने **नल–दमयंती** पुस्तक का फारसी में अनुवाद किया।
- अब्दुर्रहीम खानखाना ने बाबरनामा पुस्तक का फारसी में अनुवाद किया।

- अकबर के काल में रॉल्फ फिंच नामक ब्रिटिश विदेशी यात्री आया था।
- अकबर के समय ही ईस्ट–इंडिया कंपनी का गठन हुआ था।
- अकबर ने दक्षिण विजय के बाद सम्राट की पदवि धारण की थी।
- अकबर ने पुर्तगालियों से कार्टेज लिया था।
- अकबर के दरबार में मीर सैय्यद अली, अब्दुसम्मद खान, दसवंत, बसावंत, मनोहर, धर्मदास इत्यादि चित्रकार थे।
- अकबर ने राम–सीता प्रकार के सिक्के चलाए, इन सिक्कों पर राम–सिया लिखा रहता था।

Ranjeet Yadav Sir

- अकबर ने चांदी का रूपया और तांबे का दाम चलाया। एक चांदी के रूपये में 40 दाम होते थे।
- अकबर ने सोने का सिक्का भी चलाया। जिस पर इलाही लिखा रहता था। एक इलाही में इस रूपए होते थे।
- अकबर के काल में सबसे बड़ा स्वर्ण सिक्का **संसव** था, जो सौ तौले के बराबर भारी था।

मन्सबदारी प्रणाली

- अकबर की मन्सबदारी प्रणाली मंगोलों की दशमलव पद्धति पर आधारित थी। जिसमें दस से पांच हजार तक मन्सब दिया जाता था। यह एक प्रशासनिक और सैन्य व्यवस्था थी। मन्सब का अर्थ पद होता है, मन्सबदार ऐसे व्यक्ति थे जो राजकीय नौकरियों में होते थे। इसमें सैन्य, नागरिक तथा अमीर व्यक्ति शामिल थे।
- मन्बसदारी प्रणाली में **जात** एवं **सवार** का वर्गीकरण था। जात व्यक्तिगत पद तथा वेतन से जुड़ा था, जबकि सवार घुड़सवारों की संख्या को बताता था।
- **आइन–ए–अकबरी** पुस्तक में 66 मनसब को उल्लेख मिलता है।
- मनसबदार को नकद और जागीर के रूप में वेतन मिलता था, जिन मनसबदारों को जागीर के रूप में वेतन मिलता था, उन्हें जागीरदार कहा जाता था।
- अकबर ने मानसिंह और मिर्जा अजीज कोका को **7000** का मनसब दिया।

भू–राजस्व व्यवस्था

- अकबर की भू–राजस्व व्यवस्था का नाम आइन–ए–दहशाला था। जो 1580 में अपनाई गई। इस प्रणाली के अंतर्गत अलग–अलग फसलों पर पिछले दस वर्षों में लगने वाले राजस्व का औसत निकाला गया और पिछले दस वर्षों के उत्पादन का औसत निकालकर उसका एक–तिहाई भू–राजस्व निर्धारित किया गया।
- भू–राजस्व नकद और अनाज दोनों रूपों में स्वीकारित था।
- अकबर ने **टोडरमल** और **मुज्फ्फर खाँ** को भू–राजस्व की जिम्मेदारी दी।
- अकबर ने उच्च, मध्य व निम्न प्रकार की भूमि का वर्गीकरण कराया।
- अकबर के काल में 4 प्रकार की भूमि का उल्लेख मिलता है–

  1. **पोलर –** प्रति वर्ष बुआई।
  2. **परती –** जिस पोलज भूमि पर बुआई न हुई हो (1 से 2 वर्ष के लिए)।
  3. **चाचर –** 3 से 4 वर्षों तक बुआई न होने वाली भूमि।
  4. **बंजर –** 5 वर्षों से अधिक समय तक न बोई जाने वाली भूमि। विशेष यह था कि बंजर भूमि पर रियायती दर पर कर लगाया जाता था।

अकबर के नवरत्न

- अकबर के दरबार में नौ विशेष दरबारी रहते थे। जिनकी विशिष्ट भूमिका के कारण इन्हें नवरत्न का दर्जा मिला।

  1. **बीरबल –** इसका मूल नाम महेश दास था। यह अकबर का सलाहकार, कवि तथा प्रमुखवक्ता था।
  2. **अबुल फजल –** यह अकबर का दरबारी इतिहासकार था। इसने फारसी भाषा में अकबरनामा पुस्तक लिखी।
  3. **तानसेन –** यह संगीतकार था, इसका मूल नाम रामतनु पाण्डे था। इसने मियाँ की तोड़ी, मियाँ की मलहार, संगीतसार, रागमाला नामक पुस्तक लिखी। तानसेन शुरूआत में रीवा के महाराजा रामचंद्र के दरबारी गायक थे।
  4. **टोडरमल –** इन्होंने भूमि सुधार संबंधी काम किया। इन्हें गुजरात का दीवान बनाया गया।
  5. **मानसिंह –** मानसिंह आमेर के राजा भारमल के पौत्र थे। इन्होंने मुगलों की तरफ से महत्वपूर्ण युद्ध लड़े।
  6. **अब्दुर्रहीम खानखाना**
  7. **फैजी –** यह अबुल फजल का बड़ा भाई था। अकबर के दरबार में राजकवि के पद पर आसीन था।
  8. **मुल्ला दो प्याजा –** यह अकबर का सलाहाकार था।
  9. **हकीम हुकाम –** यह रासोईघर का प्रधान था। यह विभिन्न लिपियों को पहचानने में दक्ष था।

अकबर के युद्ध

Ranjeet Yadav Sir

4 जहाँगीर (1605-1627 ई.)

जहाँगीर (1605–1627 ई.)

- **जन्म** – 30 अगस्त, 1569 ई. फतेहपुर सीकरी में
- **मृत्यु** – 28 अक्टूबर, 1627 ई. लाहौर में
- **माता** – मरियम उज्जमानी
- **पिता** – अकबर
- **पत्नी** – मानबाई, जगत गोसाई (जोधाबाई), नूरजहाँ
- **पुत्र** – शाहजहाँ
- **उत्तराधिकारी** – शाहजहाँ
- **बजीर** – इसके समय यह पद खाली था
- **मकबरा** – लाहौर के शाहदरा में

- जहाँगीर के बचपन का नाम **सलीम** था क्योंकि इसका जन्म शेख सलीम चिश्ती के आर्शीवाद से फतेहपुर सीकरी में हुआ।
- अकबर की मृत्यु के बाद 24 अक्टूबर 1605 ई. में सलीम, नूरूद्दीन मोहम्मद जहाँगीर, बादशाह गाजी की उपाधि से मुगल साम्राज्य का शासक बना।
- जहाँगीर की माता आमेर (जयपुर) के राजा भारमल की पुत्री मरियम उज्जमानी थीं।
- जहाँगीर का राज्यारोहण विवादास्पद ढंग से हुआ था क्योंकि अकबर के दरबार के प्रमुख सामंत जहाँगीर की जगह उसके बड़े बेटे राजकुमार खुसरो को बादशाह बनाने के पक्ष में थे। जिनमें प्रमुख राजा मानसिंह और मिर्जा अजीज कोका थे। राजकुमार खुसरो का अभियान सफल न हो सका। मानसिंह और मिर्जा अजीज कोका के समर्थकों की संख्या कम थी। अकबर ने स्वयं सलीम को अपना उत्तराधिकारी माना था।
- जहाँगीर का मुख्य शिक्षक अब्दुर्रहीम खानखाना था।
- जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा फारसी भाषा में जहाँगीरनामा लिखी।
- जहाँगीर ने सिकन्दरा में अकबर का मकबरा बनवाया।
- नूरजहाँ ने आगरा में एत्माद्दौला का मकबरा बनवाया।
- नूरजहाँ ने लाहौर के शाहदरा में जहाँगीर का मकबरा बनवाया।
- नूरजहाँ का मकबरा लाहौर में है।
- नूरजहाँ का भाई आसफ खाँ की समाधि भी लाहौर में है।
- अनारकली का मकबरा भी लाहौर में है।
- जहाँगीर का पहला विवाह 1585 ई. में आमेर के राजा भगवानदास की पुत्री और मानसिंह की बहन मानबाई से हुआ था। इसी पत्नी से खुसरो का जन्म हुआ था।
- जहाँगीर का दूसरा विवाह मारवाड़ के उदयसिंह की पुत्री जगत गोसांई (जोधाबाई) के साथ हुआ था। इसी से खुर्रम का जन्म हुआ था।
- जहाँगीर ने हपनी पहली पत्नी मानबाई को **शाह बेगम** का पद प्रदान किया था। इसने बाद में आत्म हत्या कर ली थी।
- जहाँगीर ने 1611 ई. में नूरजहाँ से विवाह किया। विवाह के बाद उसे **नूर महल** की उपाधि प्रदान की। बाद में यह उपाधि **नूरजहाँ** कर दी गई। नूरजहाँ का अर्थ होता है, ''संसार की रोशनी''।
- नूरजहाँ के बचपन का नाम मेहरून्निसा था।
- नूरजहाँ के पिता का नाम **ग्यास बेग** था। जहाँगीर ने ग्यास बेग को **एत्माद्दौला** की उपाधि प्रदान की थी।
- नूरजहाँ की माता का नाम **अस्मत बेगम** था। अस्मत बेगम को इत्र का आविष्कारक माना जाता है।
- जहाँगीर के काल में नूरजहाँ गुट का बहुत प्रभाव था। इस गुट में पिता एत्माद्दौला, माँ असमत बेगम, भाई आसफ खाँ तथा शहजादा खुर्रम शामिल था।
- नूरजहाँ ने जहाँगीर के पुत्र शहरयार के साथ अपनी पुत्री लाडली बेगम का विवाह किया। लाडली बेगम नूरजहाँ के पहले पति शेर अफगान की पुत्री थी।
- नूरजहाँ जहाँगीर के साथ झरोखा दर्शन देती थी। सिक्कों पर बादशाह के साथ नूरजहाँ का नाम लिखा होता था।
- जहाँगीर बहुत न्यायप्रिय शासक था। जहाँगीर ने आगरा के किले में शाहबुर्जी और यमुना के किनारे खड़े पत्थर के एक खंभे

Ranjeet Yadav Sir

के मध्य न्याय की जंजीर लगवाई तथा 12 घोषणा प्रकाशित की। इन घोषणाओं को **आईने–जहाँगीरी** कहा जाता था।

- जहाँगीर को शराब की लत थी। यही उसकी मौत का कारण भी बनी।
- जहाँगीर ने 1602 ई. में अपने मित्र वीरसिंह बुंदेला द्वारा अबुल फजल की हत्या करवा दी और वीरसिंह बुंदेला को तीन हजार घुड़सवारों का मनसब प्रदान किया।
- धार्मिक मामलों में जहाँगीर बहुत उदार हृदय का था। उसने 1612 ई. में पहली बार रक्षाबन्धन का त्यौहार बनाया।
- जहाँगीर के काल को चित्रकला के क्षेत्र में स्वर्ण काल कहते हैं। जहाँगीर के काल के प्रमुख चित्रकार थे– **उस्ताद मंसूर, अबुल हसन, मनोहर, विशन्दास, फारूख बेग** इत्यादि।
- उस्ताद मंसूर पक्षी चित्रों का विशेषज्ञ था जबकि अबुल हसन व्यक्ति चित्र विशेषज्ञ था।
- जहाँगीर के समय चित्रकला में भारतीय पद्धति का विकास हुआ यही कारण है कि **पर्सी ब्राउन** नामक विद्वान ने कहा– ''जहाँगीर के समय मुगल चित्रकला की वास्तविक आत्मा लुप्त हो गई।''
- जहाँगीर स्वयं एक अच्छा चित्रकार था। जहाँगीर के समय मुगल चित्रकला की फारसी प्रभाव से मुक्ति हो गई। जहाँगीर के समय धार्मिक चित्र बनने कम हो गए और चित्रों में दरबार का चित्रण ज्यादा होने लगा। व्यक्ति चित्र बहुत ज्यादा संख्या में बनने लगे।

जहाँगीर के काल के प्रमुख

- ईरान के शाह अब्बास का स्वागत करते जहाँगीर।
- वर्जिन मैरी का चित्र पकड़े हुए जहाँगीर।
- मलिक अंबर के कटे सिर को लात मारते हुए जहाँगीर।
- अयार–ए–दानिश नामक पशुओं के किस्से–कहानियों की पुस्तक में चित्रकारी।
- इसके अतिरिक्त, इस काल के दौरान दरबार के दृश्यों, प्रतिकृतियों, पक्षियों, पशुओं और पुष्पों का चित्रण भी किया गया था।

- जहाँगीर ने निसार नामक चाँदी का सिक्का चलाया। जो रूपये के चौथाई मूल्य के बराबर होता था।
- जहाँगीर ने तांबे का जीतल सिक्का भी चलाया।
- जहाँगीर ने मनसबदारी प्रणाली में दो–अस्पा, सिह–अस्पा पद्धति को लागू किया।
- जहाँगीर ने सिक्कों के 5वें गुरू अर्जुन देव को मृत्यु दण्ड दिलवा दिया।
- जहाँगीर ने अहमद नगर संधि के फलस्वरूप खुर्रम को शाहजहाँ की उपाधि दी जबकि बीजापुर के शासक को 'फर्जन्द' (पुत्र) की उपाधि दी।
- 1623 ई. में शाहजहाँ का विद्रोह और 1626 ई. में महावत खाँ का विद्रोह हुआ था।
- जहाँगीर के शासनकाल में 1620 ई. में कांगड़ा की महत्वपूर्ण विजय की गई थी।
- मलिम कंबर ने टोडरमल की भू–राजस्व व्यवस्था को अपनाया तथा भूमि की पैमाइस करवायी और उपज का 1/3 अंश लगान के रूप में वसूल किया।
- जहाँगीर के दरबार में कैप्टन हॉकिन्स 1608 ई. में सूरत में आया। हॉकिन्स जहाँगीर से आगरा में मिला (1609 ई.)।
- हॉकिन्स ने जहाँगीर से फारसी में बात की। अतः जहाँगीर ने हॉकिन्स को इंग्लिश खान की उपाधि दी।
- हॉकिन्स को इंग्लैंड के राजा जेम्स प्रथम ने भेजा था। यह अकबर के नाम एक पत्र लाया था।
- जहाँगीर ने हॉकिन्स को 400 का मनसब प्रदान किया।
- सर टॉमस रॉ 1615 ई. में जहाँगीर के दरबार में आया। ये जहाँगीर से सूरत में व्यापार करने के लिए फरमान प्राप्त करने में सफल रहा। इसे भी जेम्स प्रथम ने भेजा था।
- जहाँगीर ने अकबर के दीन–ए–इलाही को समाप्त कर दिया और दीन–ए–इलाही ने दीक्षा देना बंद कर दिया।
- जहाँगीर के समय मुगलों और राजपूतों में वैवाहिक संबंध होते रहे।
- जहाँगीर के चित्रकार उस्ताद मंसूर को जहाँगीर ने **नादिर–उल–अस्र** की उपाधि दी तथा अबुल हसन को जहाँगीर ने **नादिर–उल–जमाँ** की उपाधि दी।
- अनारकली का प्रेम सम्बन्ध जहाँगीर से था।
- जहाँगीर ने जकात, तमका करों का निषेध किया।
- जहाँगीर ने सप्ताह में दो दिन गुरूवार और रविवार को पशु हत्या पर रोक लगाई।
- जहाँगीर ने मनसबों और जागीरों का सामान्य प्रमाणीकरण करवाया।
- जहाँगीर ने अपराधियों के घरों की कुर्की तथा उनके नाक और कान काटे जाने पर रोक लगाई।
- 1627 ई. में भीमवार नामक स्थान पर जहाँगीर की मृत्यु हुई।

Ranjeet Yadav Sir

5

शाहजहाँ
(1627-1658 ई.)

शाहजहाँ (1627 – 1658 ई.)

- **जन्म** – 1592 ई. लाहौर में
- **मृत्यु** – 1666 ई. आगरा में
- **माता** – जगतगोसाई (जोधाबाई)
- **पिता** – जहाँगीर
- **पत्नी** – अर्जुमंदबानो बेगम (मुमताज महल)
- **पुत्र** – दारा शिकोह, औरंगजेब, शाहशुजा, मुरादबख्श
- **पुत्री** – जहाँआरा, रोशनआरा
- **उत्तराधिकारी** – औरंगजेब
- **बजीर** – इसके समय यह पद समाप्त हो गया।
- **मकबरा** – ताजमहल आगरा में

- शाहजहाँ के बचपन का नाम **खुर्रम** था। अहमद नगर अभियान के सफल होने पर जहाँगीर ने खुर्रम को 1617 ई. में शाहजहाँ की उपाधि दी।
- शाहजहाँ का शाब्दिक अर्थ संसार का स्वामी होता है।
- शाहजहाँ के काल को स्थापत्य के क्षेत्र में स्वर्णकाल कहा जाता है क्योंकि इसके काल में सबसे ज्यादा स्थापत्य निर्माण हुआ और सबसे ज्यादा सफेद संगमरमर के पत्थरों का प्रयोग किया गया। यह पत्थर राजस्थान के मकराना क्षेत्र से मंगाया जाता था।
- शाहजहाँ ने आगरा के लाल किले में दीवान–ए–आम, दीवान–ए–खास, मच्छी भवन, शीश महल, नगीना मस्जिद, मोती मस्जिद बनवाई।
- शाहजहाँ ने दिल्ली में लाल किला बनवाया। इस लाल किले में शाहजहाँ ने मोती महल, हीरा महल, रंग महल, दीवान–ए–आम, दीवान–ए–खास बनवाया।
- शाहजहाँ ने लाहौर में नौलख्खा महल, ख्वाब महल बनवाया।
- शाहजहाँ ने दिल्ली में जामा मस्जिद बनवाई।
- शाहजहाँ ने दिल्ली में शाहजहाँनाबाद शहर की स्थापना की और इसी को अपनी राजधानी बनाया।
- शाहजहाँ की बेटी जहाँआरा ने आगरा में जामी मस्जिद बनवाई।
- दिल्ली के दीवाने–ए–खास में लिखा है– यदि धरती पर कहीं स्वर्ग है तो वह यहीं है, यहीं है, यहीं है।
- शाहजहाँ ने आगरा में यमुना नदी के किनारे ताजमहल बनवाया। ताजमहल की डिजाइन उस्ताद अहमद लाहौरी ने तैयार की एवं उस्ताद ईसा खाँ के निर्देशन मे 22 साल तक ताजमहल पर काम चला। यह सफेद संगमरमर से निर्मित पित्रादूरा शैली में बना है।
- पित्रादूरा इतालबी भाषा का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है– **कठोर पत्थर**। इस तकनीकी में पत्थरों पर फूल पत्तियों की पच्चीकारी की जाती है। इस शैली में भवन इटली में बनाये जाते थे। पित्रादूरा तकनीकी से भारत में पहली इमारत एत्माद्दौला का मकबरा बनी।
- ताजमहल यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल होने वाला भारत का प्रथम स्मारक है। 1983 में ताजमहल को यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल कर लिया गया।
- आगरा के किले में मोती मस्जिद शाहजहाँ ने बनवाई जबकि दिल्ली के लाल किले में मोती मस्जिद औरंगजेब ने बनवाई।

- शाहजहाँ ने आना नामक चांदी का सिक्का चलाया। जो एक रूपये के 16वें भाग के बराबर होता था।
- शाहजहाँ के समय 6 दीवान हुए थे जिनमें सादुल्ला खाँ सबसे प्रसिद्ध था। —
- शाहजहाँ के समय दक्षिण के अहमद नगर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।
- शाहजहाँ ने मनसबदारी व्यवस्था में **जमा** व **हासिल** के बढ़ते अन्तर के कारण उसने महीने अनुसार तिमाही, छमाही का नियम लागू किया और साम्राज्य से दूरी के अनुसार मनसबदारों के सवार पदों में कटौती की।

Ranjeet Yadav Sir

- शाहजहाँ का दरबारी इतिहासकार अब्दुल हमीद लाहौरी था। इसके अलावा सुजान राय, कादिरी तथा वारिश इसके समय इतिहासकार थे।
- शाहजहाँ गाना सुनने का शौकीन था और स्वयं भी बहुत अच्छा गाता था। शाहजहाँ के दरबार में जगन्नाथ पंडित, सुखसेन, सूरसेन, कुदसी और अबुकालीन संगीतकार थे।
- लाला खाँ गजल गायक था। इसके शाहजहाँ ने गुणसमंदर की उपाधि दी।
- चित्रकला के क्षेत्र में शाहजहाँ के दरबार में अनुपचित्र और मुहम्मद फकीर रहते थे।
- शाहजहाँ का राजकवि पंडित जगन्नाथ थे। पंडित जगन्नाथ ने रसगंगाधर और गंगालहरी नामक पुस्तक लिखी।
- केशवदास ने कविप्रिया, रसिकप्रिया तथा अलंकारमंजरी नामक ग्रंथ लिखा।
- मुगल बादशाहों में शाहजहाँ के समय सबसे अधिक नहरों का निर्माण किया गया।
- शाहजहाँ ने श्रीनगर में शालीमार बाग और निशात बाग का निर्माण कराया था।
- शाहजहाँ ने अब्दुल हामिद लाहौरी को नादिर–उल–असर की उपाधि दी।
- शाहजहाँ ने अपने बड़े पुत्र दाराशिकोह को जैसे ही उत्तराधिकारी घोषित किया उत्तराधिकार का युद्ध शुरू हो गया, जिसका वर्णन निम्नलिखित है–

उत्तराधिकार का युद्ध :
- बहादुरगढ़ का युद्ध (फरवरी 1658) – शाहशूजा और जय सिंह, विजयी–जय सिंह
- धरमत का युद्ध (अप्रैल 1658) – जसवंत सिंह और औरंगजेब, विजयी– औरंगजेब
- सामूगढ़ का युद्ध (जून 1658) – दाराशिकोह और औरंगजेब, विजयी–औरंगजेब
- देवराई का युद्ध (1659) – दाराशिकोह और औरंगजेब, विजयी–औरंगजेब

सैन्य अभियान :
- **बुदेलों का विद्रोह (1628 – 1636) –** जुझर सिंह ने विद्रोह करते हुए स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया। इसके विद्रोह को दबाया गया। लेकिन इसके उत्तराधिकारी चम्पत राय और छत्रसाल ने विद्रोह को जारी रखा।
- **खानेजहाँ तेलंगानी का विद्रोह (1628 – 1631)** यह मालवा का सुबेदार था। इसके विद्रोह को पूर्ण रूप से कुचल दिया गया।
- **पुर्तगाली (1632) –** इन लोगों ने हुगली पर नियंत्रण करते हुए विद्रोह किया परिणामस्वरूप अभियान किया तब पुर्तगाली लोग फुल्टा द्वीप में शरण लिये।
- शाहजहाँ ने हुगली जैसे औद्योगिक नगर पर नियंत्रण कर लिया।
- **अहमद नगर (1636) –** शिवाजी के पिताजी शाह जी भोसले ने मुर्तजा तृतीय नामक बालक को गद्दी पर बैठाकर स्वयं संरक्षक बन गये। मीरजुमला नामक व्यक्ति भी इस राज्य से संबंधित था। औरंगजेब ने अभियान किया और अहमदनगर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।

- उत्तराधिकार के संघर्ष के बाद शाहजहाँ को औरंगजेब ने आगरा के किले के शाहबुर्ज में कैद कर लिया। 1666 ई. में आगरा के लाल किले के अन्दर ही शाहजहाँ की मौत हो गई। शाहजहाँ को ताजमहल में ही मुमताज महल की कब्र के पास दफना दिया गया।
- शाहजहाँ के काल में अनेक विदेशी यात्री भारत आए।
  1. **जीन बैप्टिस्ट ट्रेबर्नियर –** यह एक फ्रांसीसी यात्री था। यह एक जौहरी था। इसने पूर्व की सात यात्राएँ की थीं। जिनमें से 6 बार हिन्दुस्तान आया था।
  2. **फ्रंसिस बर्नियर –** यह भी एक फ्रांसीसी यात्री था। यह एक चिकित्सक था। बर्नियर जब भारत आया, तो शाहजहाँ के बेटों में उत्तराधिकार का संघर्ष चल रहा था।
  3. **मनूची –** यह इटली का यात्री था। मनूची ने उत्तराधिकार के युद्ध को शाहजहाँ के काल में अपनी आंखों से देखा। मनूची ने **स्टोरियो डी मोगोर** नामक ग्रंथ लिखा, जिसमें समकालीन इतिहास का वर्णन किया गया है।
  4. **पीटर मुंडी –** यह भी इटली का यात्री था। शाहजहाँ के काल में भीषण अकाल पड़े, इसकी चर्चा पीटर मुंडी ने अपने ग्रंथ में की है।

- शाहजहाँ ने कोहिनूर हीरा जड़ित **तख्त–ए–ताउस** का निर्माण कराया, जिसे बेग बादल खाँ के नेतृत्व में तैयार किया गया।
- शाहजहाँ को कोहिनूर हीरा गोलकुंडा के बजीर **मुहम्मद सईद (मीर जुमला)** ने भेंट किया।
- शाहजहाँ ने औरंगजेब को दो बार दक्षिण का सूबेदार बनाया। प्रथम बार 1636 से 1644 ई. तक तथा दूसरी बार 1653 से 1656 ई. तक। शाहजहाँ का दक्षिण अभियान सफल माना जाता है।

- शाहजहाँ के शासन काल में ही 1649 ई. में कंधार हमेशा के लिए भारत से छिन गया।
- शाहजहाँ ने इलाही संवत की जगह पुनः हिजरी संवत लागू किया।
- शाहजहाँ ने सिजदा प्रथा को समाप्त कर चहार–ए–तसलीम की परम्परा शुरू की।
- शाहजहाँ का प्रसिद्ध दीवान सादुल्लाखाँ था।
- शाहजहाँ ने मुगल साम्राज्य की राजधानी आगरा से दिल्ली स्थानांतरित की तथा शाहजहाँनाबाद नगर को अपनी राजधानी बनाया।

दाराशिकोह

- यह शाहजहाँ का सबसे बड़ा एवं सबसे प्रिय पुत्र था। दाराशिकोह का जन्म 1615 ई. में हुआ था। शाहजहाँ दाराशिकोह को बहादुर नाम से पुकारता था।
- दाराशिकोह शाहजहाँ के सभी बेटों में सबसे ज्यादा पढ़ा–लिखा था।
- दाराशिकोह के गुरू **मुल्लाशाह बदाक्शी** थे।
- दाराशिकोह कादिरी सूफी सिलसिले का अनुयायी था।
- दाराशिकोह को शाहजहाँ ने **शाह–ए–बुलंद इकबाल** की उपाधि प्रदान की थी।
- लेनपूल नामक विद्वान ने दाराशिकेह को **लघु अकबर** कहा।
- दाराशिकोह ने स्वयं एवं कुछ विद्वानों के सहयोग से 52 उपनिषदों का फारसी में **सिर्र–ए–अकबर** नाम से अनुवाद किया।
- दाराशिकोह के नेतृत्व में **भगवत गीता** तथा **योग वशिष्ठ** नामक पवित्र हिन्दु ग्रंथों का अनुवाद हुआ।
- दाराशिकोह ने **मज्म–उल–बहरीन** नामक ग्रंथ लिखा जिसका अर्थ होता है– दो समुद्रों का मिलन। अर्थात् हिन्दु और मुस्लिम धार्मिक समन्वय पर बल देना।
- दाराशिकोह ने **सफीनत–उल–औलिया** नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में सूफी–सन्तों की जीवनी तथा उनके विचारों का संग्रह है।
- दाराशिकोह ने **सकीनत–उल–औलिया** नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में **मियां मीर** व **मुल्लाहशाह बदाक्शी** का जीवन चरित्र है।
- दाराशिकोह की कब्र हुमायूँ के मकबरे के परिसर में बनीं है।

जहाँआरा

- यह शाहजहाँ की पुत्री थी। उत्तराधिकार के युद्ध में यह दाराशिकोह की समर्थक थी। यह आजीवन अविवाहित रही। जहाँआरा ने अपने पिता शाहजहाँ की अन्तिम क्षणों तक सेवा की। औरंगजेब द्वारा जहाँआरा को भी गिरफ्तार करवाया गया।
- औरंगजेब ने जहाँआरा को साम्राज्य की प्रथम महिला का दर्जा दिया।
- जहाँआरा ने सूफी सन्त मुल्ला शाह पर **साहिबिया** नामक पुस्तक लिखी।
- जहाँआरा की कब्र **हजरत निजामुद्दीन औलिया** की दरगाह से दक्षिण की ओर स्थित है।
- जहाँआरा का जन्म 1614 ई. में हुआ। जहाँआरा शाहजहाँ की सबसे बड़ी बेटी थी। 17 साल की उम्र में जहाँआरा को पादशाह बेगम बनाया गया, जो किसी महिला के लिए सबसे बड़ दर्जा था।
- औरंगजेब ने जहाँआरा को **साहिबात–उज–जमानी** की उपाधि प्रदान की।

Ranjeet Yadav Sir

6 औरंगजेब

(1618-1707 ई.)

औरंगजेब (1658–1707 ई.)

- **जन्म** – 1618 ई. उज्जैन के निकट दोहद नामक स्थान पर
- **मृत्यु** – 1707 ई. अहमदनगर (भिंगर) में
- **माता** – मुमताज बेगम (अर्जुमंद बानो बेगम)
- **पिता** – शाहजहाँ
- **पत्नी** – दिलरास बानो बेगम (रबिया बीवी)
- **पुत्र** – बहादुर शाह प्रथम (मुअज्जम), मुहम्मद आजम शाह, मुहम्मद कामबख्श
- **पुत्री** – मेहरून्निसा
- **उत्तराधिकारी** – बहादुरशाह प्रथम
- **मकबरा** – महाराष्ट्र के खुलदाबाद नामक स्थान पर है

- औरंगजेब का राज्यभिषेक दो बार हुआ– राज्यभिषेक के अवसर पर औरंगजेब ने 'अब्दुल मुजफ्फर मुहीउद्दीन मुहम्मद औरंगजेब बहादुर आलमगीर पादशाह गाजी' की उपाधि धारण की।
- औरंगजेब को जिंदा पीर या शाही दरवेश (संत) कहा गया है।
- औरंगजेब को आलमगीर भी कहते हैं।
- औरंगजेब एक प्रसिद्ध वीणावादक था। इसी के समय में सबसे अधिक संगीत की पुस्तक लिखी गई।
- औरंगजेब के दरबार में सबसे अधिक हिंदू मनसबदार थे।
- औरंगजेब ने 1679 ई. में जजिया कर को पुनः लागू कर दिया।
- औरंगजेब ने अंग्रेजों से भी जजिया कर वसूला।
- औरंगजेब ने सोमनाथ का मंदिर, काशी विश्वनाथ का मंदिर और मथुरा के केशवराय मंदिर को तुड़वा दिया।
- इसने अकबर द्वारा शुरू किया गया झरोखा दर्शन, तुलादान की प्रथा, नौरज प्रथा, सिक्का पर कलमा को अंकित कराने की प्रथा को समाप्त कर दिया।
- इसने साबरमती के पर दाह संस्कार को भी प्रतिबंधित कर दिया।
- औरंगजेब ने उपयुक्त सभी पर निगरानी रखने के लिए मुहतसिब नामक अधिकारी नियुक्त किया अर्थात् मुहतसिब सार्वजनिक आचार–विचार का अधिकारी था।
- इसने अपने धार्मिक नीति को लागू करने के लिए एक अध्यादेश जारी किया जिसको जबावित कहा गया।
- इसने दिल्ली में मोदी मस्जिद का निर्माण कराया था।
- इसने औरंगाबाद का निर्माण कराकर वहां पर अपनी पत्नी रबिया दोरानी का मकबरा भी बनवाया था। जिसको ताजमहल का फूहड़ नकल माना गया है।
- इसने लाहौर में बादशाही मस्जिद का निर्माण कराया था।
- औरंगजेब ने शिवाजी को पहाडी चूहा कहा।
- औरांगजेब एक कट्टर सुन्नी मुसलमान तथा रूढ़िवादी शासक था। उसने कुरान (शरीयत) को अपने शासन का आधार बनाया।
- औरंगजेब ने उलेमा वर्ग की सलाह के अनुसार इस्लामी ढंग से राज किया।
- औरंगजेब ने मुद्राओं पर कलमा खुदवाना बंद कर दिया था।
- नौरोज, जो पारसियों का त्यौहार था उसे राज्य में मनाया जाना बंद कर दिया।
- औरंगजेब दार–उल–हर्ब (काफिरों को देश) की जगह दार–उल–इस्लाम (इस्लामिक देश) का समर्थक था।
- मुस्लिम व्यापारियों से चुंगी लेना बंद कर दिया गया। जबकि हिन्दू व्यापारी चुंगी देते थे।
- औरंगजेब ने तीर्थ यात्रा कर लेना भी प्रारंभ कर दिया।
- औरंगजेब ने देश के व्यापार को बढ़ाने के लिए राहदारी (परिवहन कर) रोड़ तथा पंडारी (चुंगी कर) करों का समाप्त कर दिया।
- **दक्षिण अभियान में नेतृत्व का क्रम :**
  - शाइस्ता खाँ – जयसिंह – मुअज्जम – बहादुर खाँ – शाह आलम – स्वयं औरंगजेब
- औरंगजेब के शासन प्रारंभ में किसी को दीवान नहीं बनाया गया लेकिन 1667 ई. में असद खाँ की नियुक्ति की गई वह 31 वर्ष (सबसे लम्बे समय तक) इस पद पर रहा।
- औरंगजेब ने अपने अन्तिम शासन काल में कुछ सिक्कों पर 'मीर अब्दुल बाकी शाहवाई' द्वारा रचित एक पद्य अंकित करवाया।
- औरंगजेब के समय में सर्वाधिक टकसाल (85) थी।

Ranjeet Yadav Sir